एम. ए. हिन्दी (पूर्वार्द्ध)
भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा

प्रश्न पत्र : 4

पूर्णांक : 100
समय : 3 घण्टे

निर्देश

1. *पूरे पाठ्यक्रम से दस अति लघु प्रश्न पूछे जाएंगे। परीक्षार्थियों को प्रत्येक प्रश्न का (लगभग 30 से 50 शब्दों में) उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होगा। पूरा प्रश्न 20 अंकों का होगा।*
2. *पूरे पाठ्यक्रम से 10 लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से परीक्षार्थियों को 7 प्रश्नों के (लगभग 100-150 शब्दों में) उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक को होगा। पूरा प्रश्न 35 अंकों का होगा।*
3. *खण्ड "क" और "ख" दोनों खण्डों से कम से कम दो-दो और कुल मिलाकर पाँच प्रश्न पूछे जाएंगे। परीक्षार्थियों को तीन प्रश्नों के उत्तर देना होगा। जिनमें से प्रत्येक खण्ड से कम से कम एक प्रश्न करना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंकों का होगा।*

(क) भाषा विज्ञान

1. भाषा और भाषा विज्ञान
   भाषा : परिभाषा और प्रवृत्ति — भाषा : व्यवस्था और भाषा-व्यवहार
   भाषा : संरचना और भाषिक-प्रकार्य — भाषाविज्ञान : परिभाषा-स्वरूप एवं व्याप्ति
   भाषाविज्ञान : अध्ययन की दिशाएँ (वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक)
2. स्वनविज्ञान
   स्वनविज्ञान : स्वरूप और शाखाएं वाग्यंत्र और ध्वनि-उत्पादन प्रक्रिया
   स्वन : अवधारण और वर्गीकरण, — स्वनगुण और उसकी सार्थकता, स्वनिक परिवर्तन की दिशाएँ
   स्वनिम : परिभाषा : अवधारण और भेद
3. रूप और वाक्य
   रुपिम की अवधारणा और भेद (मुक्त-आबद्ध, अर्थदर्शी-संबंधदर्शी रुपिम), संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य।
   वाक्य की अवधारणा और भाषा की इकाई के रूप में वाक्य,
   अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, निकटस्थ अवयव, वाक्य के गहन संरचना
4. अर्थविज्ञान
   अर्थ की अवधारणा, शब्द-अर्थ संबंध, — एकार्थकता, अनेकार्थता, विलोम,
   अर्थ-बोध के साधन, अर्थ-परिवर्तन के कारण, अर्थ-परिवर्तन की दिशाएं
5. भाषा विज्ञान का अन्य विषयों से संबंध
   साहित्य के अध्ययन में भाषा विज्ञान की उपयोगिता, भाषा विज्ञान और व्याकरण संबंध।

(ख) हिन्दी भाषा

1. हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
   भारतीय आर्य भाषाएँ
   प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ-वैदिक तथा लौकिक संस्कृत : परिचय
   मध्ययुगीन भारतीय आर्य भाषाएँ-पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश-परिचय, आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ-परिचय
   आधुनिक भारतीय आर्य वर्गीकरण-हार्नले और ग्रियर्सन के वर्गीकरण
2. हिन्दी और उसका विकास
   अपभ्रंश (अवहट्ट सहित) और पुरानी हिंदी स्वरूप और संबंध हिंदी की उपभाषाएं : पश्चिमी हिंदी और उनकी बोलियां
   पूर्वी हिंदी और उनकी बोलियाँ, राजस्थानी और उनकी बोलियाँ, पहाड़ी और उनकी बोलियाँ
   काव्य भाषा के रूप में अवधी का उद्भव और विकास, काव्य-भाषा के रूप में ब्रज का उद्भव और विकास, साहित्यिक हिंदी के रूप में खड़ी बोली का उद्भव और विकास, मानक हिंदी का रूपगत विवेचन
3. हिन्दी का भाषिक स्वरूप
   हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था-खंड्य, खंड्येतर — खंड्य स्वनिम वर्गीकरण-स्वर एवं व्यंजन
   हिन्दी शब्द-संरचना-उपसर्ग, प्रत्यय, समस्तपद — रूप रचना-हिन्दी की व्याकरणिक कोटियाँ
   लिंग, वचन, कारक और काल की व्यवस्था संदर्भ से हिन्दी — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया रूप।
   हिन्दी वाक्य रचना : सार्थकता, पदक्रम, अन्विति।
4. हिन्दी प्रसार आंदोलन और हिन्दी के विविध रूप
   हिन्दी-प्रसार आंदोलन-प्रमुख व्यक्तियों और संस्थाओं का योगदान हिन्दी के विविध रूप-बोली, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, संचार भाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।
5. नागरी लिपि
   नागरी लिपि नामकरण और विकास — नागरी लिपि की वैज्ञानिकता
   नागरी लिपि का मानकीकरण
6. हिन्दी में कंप्यूटर सुविधाएं
   आंकड़ा-संसाधन और शब्द-संसाधन — वर्तनी शोधन
   हिन्दी भाषा-शिक्षण